कृषि

1. परिचय:-

कृषि अंग्रेजी के एग्रीकल्चर शब्द से लिया गया है जिसका शाब्दिक अर्थ एग्री यानी मृदा और कल्चर अर्थात् कृषि होता है।

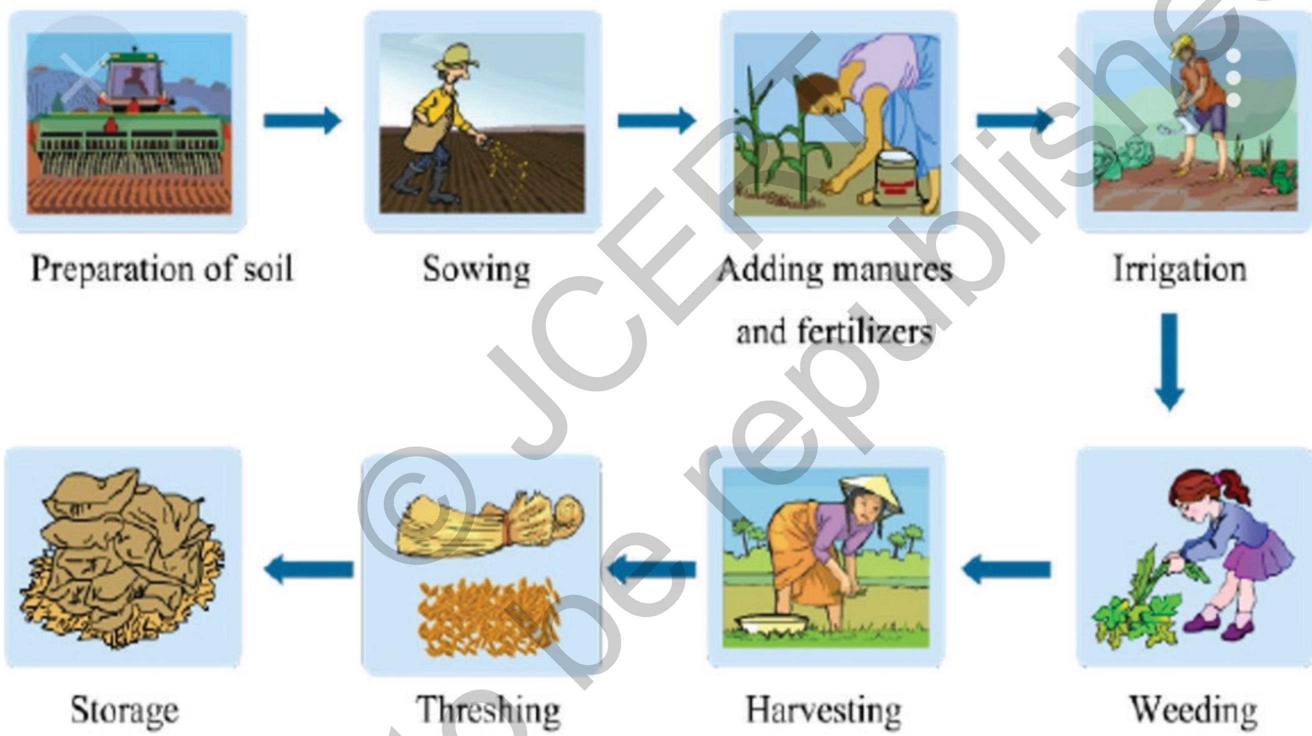

© JCERT not to be republished

कृषि

परिचय :
कृषि अंग्रेजी के एग्रीकल्चर शब्द से लिया गया है जिसका शाब्दिक अर्थ एग्री यानी मृदा और कल्चर अर्थात् कृषि होता है |

कृषि के प्रकार

- निर्वाह कृषि
  - निर्वाह कृषि
  - आदिम निर्वाह कृषि
- वाणिज्य कृषि
  - वाणिज्य कृषि
  - मिश्रित कृषि
  - रोपण कृषि

© JCERT not to be republished

वाणिज्य कृषि ऐसी कृषि जिसका उपयोग सिर्फ व्यसायिक कार्य के लिए की जाती है। जैसे : चाय, कॉफी, रबड़ गन्ना, केला आदि।

प्रारभिक जीवन निर्वाह कृषि मानव जीवन के आरंभिक काल में जिस कृषि का प्रयोग किया जाता था आज भी जगह विशेष पर उस कृषि को की जाती है इस कृषि में परम्परागत औजार जैसे लकड़ी के हल,खुदाई करने वाली छड़ी एवं समुदाय श्रम अथवा परिवार की मदद से करते है।

गहन जीविका कृषि. सघन आबादी वाले क्षेत्र में जब बड़े भूभाग पर उन्नत तकनीकी की प्रयोग से कृषि की जाती है ।

झूम कृषि

यह कर्तन दहन कृषि भी कहलाती है।

इस कृषि के तहत जंगलों को साफ किया जाता है और उस जगह पर कृषि की जाती है। उपजाऊपन खत्म होते ही पलायन कर किसी और जगह जा कर समान पद्धति से कृषि करते है।

© JCERT not to be republished

शस्य प्रतिरूप

फसल चक्र (Crop Rotation)

प्रकार	बुआई	कटाई	प्रमुख फसलें
रबी	अक्टूबर - नवंबर	मार्च-अप्रैल	गेहूँ, जौ, चना, मटर, सरसों, मसूर, आलू आदि
खरीफ	जून-जुलाई	अक्टूबर - नवंबर	चावल, ज्वार, बाजरा, मक्का, तिल, मूँगफली आदि
जायद	मार्च-अप्रैल	जून - जुलाई	तरबूज, खरबूज, ककड़ी, खीरा एवं अन्य सब्जियां

मुख्य फसलें

भारत में उगाई जाने वाली मुख्य फसल, चावल, गेहूं ,मोटे अनाज, दाले,चाय, कॉफी, गन्ना तिलहन कपास और जूट है।

चावल

चावल एक खरीफ फसल है। इसकी खेती के लिए तापमान 25 डिग्री सेल्सियस और आद्रता 100 सेंटीमीटर से अधिक होनी चाहिए। उत्पादन में भारत का स्थान चीन के बाद दूसरा है। दोमट मिट्टी चाहिए

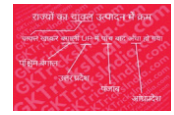

गेहूं

गेहूं की खेती के लिए 50 से 75 सेंटीमीटर वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है तथा तापमान19 से 23 डिग्री चाहिए। मिट्टी दोमट, बलुई काली चाहिए।

गेहूं की खेती करने वाले मुख्य राज्य पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान और मध्यप्रदेश के कुछ भाग आते हैं।

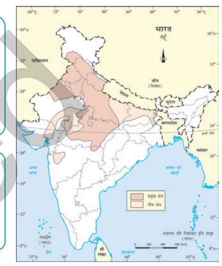

मोटे अनाज

मुख्य रूप से ज्वार, बाजरा और रागी आता है। महाराष्ट, छत्तीसगढ़, हरियाणा, गुजरात, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, झारखंड, तमिलनाडु आदि राज्यों में होती है।

दालें

प्रमुख रूप से अरहर, चना, मसूर, उड़द, मटर आदि दालो का उत्पादन किया जाता है। प्रमुख उत्पादक राज्य मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश है।

© JCERT not to be republished

खाद्यानो के अलावे अन्य खाद्य फसलें

गन्ना

गन्ना एक नकदी फसल के रूप में जानी जाती है गन्ने से चीनी बनाया जाता है और चीनी के उत्पादन में भारत दूसरा स्थान रखता है गन्ने की खेती भारत में उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब, हरियाणा मुख्य है। गन्ने की खेती के लिए तापमान 21 डिग्री से 27 डिग्री चाहिए तथा वर्षा 75 डिग्री सेल्सियस से 100 डिग्री सेल्सियस चाहिए।

तिलहन

सोयाबीन, अरंडी अलसी, तिल, बिनौला, नारियल, सूरजमुखी, सरसों आदि मुख्य रूप तिलहन के रूप में जानी जाती है। भारत में कुल बोए गए क्षेत्र का 12 % भाग पर तिलहन की कृषि की जाती हैं।

चाय

चाय एक नकदी एवं पेय फसल है इसकी जलवायु उष्ण उपोष्ण चाहिए तापमान 24 से 30 डिग्री चाहिए वर्षा 50 से 250 सेंटीमीटर चाहिए।
चाय की खेती भारत में मुख्य रूप से असम, पश्चिम बंगाल तमिलनाडु, केरल आदि राज्यों पर होती है

कॉफी

कॉफी एक पेय पदार्थ के साथ-साथ व्यापारिक फसल है। कॉफी की कृषि के लिए तापमान 15 डिग्री से 30 डिग्री चाहिए तथा कम शुष्क और आर्द्र जलवायु होनी चाहिए। भारत में मुख्य रूप से कॉफी या कहवा की कृषि कर्नाटक केरल राज्यों में किया जाता है। इस कृषि की शुरुआत कर्नाटक के बाबा बुदन पहाड़ी से किया गया था।

© JCERT not to be republished

कॉफी

चाय

तिलहन

बागवानी फसलें

बागवानी एक ऐसी गतिविधि है जिसके तहत सब्जियां फूलों और फलों की कृषि की जाती है।

भारत में विभिन्न प्रकार की जलवायु होने से विभिन्न प्रकार के फलों और सब्जियों की खेती की जाती है।

महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल के आम नागपुर और चेरापूंजी के संतरे, केरल मिजोरम महाराष्ट्र और तमिलनाडु के केले, उत्तर प्रदेश और बिहार की लीची, मेघालय के अनानास, आंध्रप्रदेश और महाराष्ट्र के अंगूर, हिमाचल और जम्मू कश्मीर के सेब, नाशपाती, खुबानी और अखरोट की विश्व भर में मांग है तथा सब्जी के उत्पादन में मटर, फूलगोभी, प्याज, बंद गोभी, टमाटर, आलू आदि प्रमुख है।

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

अश्वाद्य फसलें

वैसी फसलें जिसका उपयोग खाने के रूप में नहीं बल्कि एक नकदी या व्यापारिक फसल के रूप में उत्पादन किया जाता है। जैसे, रबड़ कपास, जूट आदि।

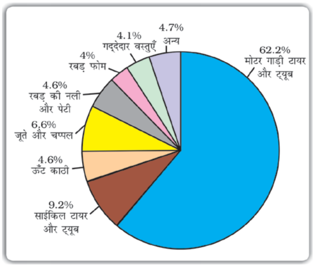

रबड़

- रबड़ मुख्य रूप से भूमध्य रेखीय, उष्ण तथा उपोष्ण जलवायु में उगाई जाने वाली एक रोपण कृषि है।
- यह एक प्रकार का प्राकृतिक प्लास्टिक है जो कच्चे माल के रूप में उद्योगों में प्रयुक्त होता है।
- भारत में केरल तमिलनाडु, कर्नाटक, अंडमान निकोबार दीप समूह में उगाया जाता है।
- उत्पादन की दृष्टि से भारत रबड़ के मामले में पांचवा स्थान है।
- भौगोलिक दृष्टि में तापमान 25 डिग्री सेल्सियस से अधिक वर्षा 200 सेंटीमीटर से 400 सेंटीमीटर के बीच तथा मिट्टी जलोढ़ या लेटेराइट चाहिए।
- प्राकृतिक रबड़ का उपयोग

रेशेदार फसलें

भारत में मुख्य रूप से चार प्रकार की रेशेदार फसलें उगाई जाती है। कपास, जूट, सन और प्राकृतिक रेशम

कपास

- कपास रेशे वाली एवं नकदी फसल है।
- कपास के पौधे बहुवर्षीय झाड़ीनुमा वृक्ष होता है।
- कपास कच्चा माल के रूप में सूती वस्त्रउधोग में उपयोग किया जाता है।
- उत्पादन के मामले में भारत विश्व में चीन और अमेरिका के बाद तीसरा स्थान रखता है।
- भारत में कपास का उत्पादन मुख्य रूप से महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में किया जाता है।
- कपास के लिए तापमान 20 से 27 डिग्री सेल्सियस और वर्षा 25 से 100 सेंटीमीटर तथा काली मिट्टी होनी चाहिए

जूट

- जूट शब्द संस्कृत के जटा या जूट से बना है जूट एक नगदी एवं व्यापारिक फसल है।
- जूट की खेती बाढ़ के मैदानो में जल निकासी वाली उर्वरक मिट्टी में की जाती है।
- जूट के उत्पादन में भारत विश्व में पहले स्थान पर आता है यह मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल, बिहार, उड़ीसा तथा मेघालय राज्य में की जाती है
- जूट के रेशे से बोरे, कालीन, दरियों, पर्दे घरों की सजावट के सामान आदि बनाया जाता है।

© JCERT not to be republished

प्रौधोगिकीय और संस्थागत सुधार

- भारत एक कृषि प्रधान देश है यहां की 60% जनसंख्या कृषि कार्य में लगी हुई है
- भारत एक विकासशील देश होने के कारण अभी भी यहां पर परंपरागत ढंग से कृषि की जाती है जिससे जनसंख्या के अनुपात में उत्पादन कम होता है जैसे सिंचाई की सुविधा सभी जगह पर पर नहीं होने के कारण अभी भी किसान मानसून पर निर्भर रहते हैं।
- सरकार ने बहुत सारे संस्थागत सुधार किए हैं जैसे कम दर पर किसानों को ऋण देने के लिए ग्रामीण बैंक सहकारी समितियां और किसान क्रेडिट कार्ड की भी सुविधा दी है। किसानों को बिचौलियों और दलालों के शोषण से बचने के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा की है।
- इस में अभी भी प्रोधोगिकिय और संस्थागत सुधार की आवश्यकता है। जैसे अत्याधुनिक मशीन, नई तकनीकी, किसानों को आर्थिक सहायता, मुक्त ऊर्जा, HYV बीज,फसल बीमा तथा कृषि वित्त आदि के द्वारा प्रौद्योगिकी और संस्थागत सुधार की सकती है।

कृषि की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था, रोजगार और उत्पादन में योगदान

- भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि को रीढ की हड्डी कहा जाता है।
- 1950 के दशक में हमारी अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान 53% होती थी जो आज सिर्फ 14 % ही रह गया है।
- देश के निर्यात के क्षेत्र में कृषि का योगदान 10% है।
- सकल घरेलू उत्पादन में कृषि का योगदान घट रहा है साथ ही रोजगार के क्षेत्र में भी कमी हो रही है- इसका मुख्य कारण भारत में कृषि क्षेत्र की और कम ध्यान जाना, भूमि निम्नीकरण, छोटे बड़े किसानों में अंतर बढ़ना है।

वैश्वीकरण का कृषि पर प्रभाव

- वैश्वीकरण का कृषि पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही पहलू आती है।
- सकारात्मक पहलू के अंतर्गत यंत्रीकरण, जीएम फसलें, जल सिंचाई की नई तकनीकी जैसे ड्रिप सिंचाई,नए बाजार के कारण निर्यात प्रोत्साहन, उत्पादन प्रचार- प्रसार के लिए ई-कॉमर्स जैसी नई तकनीकी विदेशी और संस्थानों के साथ अनुसंधान सहयोग बढ़ना आदि।
- नकारात्मक पहलू के अंतर्गत निम्न परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है जैसे- वैश्विक ब्रांडों से प्रतिस्पर्धा, डब्ल्यूटीओ जैसा संगठन कृषि क्षेत्र के लिए सुरक्षा तंत्र को कम करना, जीएम फसलों का मुद्दा, वैश्विक बाजारों में कीमतें स्थानीय कीमतों को प्रभावित करती है।बहुराष्ट्रीय ब्रांडो द्वारा स्थानीय उत्पादनों का पेटेंट करना आदि।

© JCERT not to be republished

खाद्य सुरक्षा

- खाद्य पदार्थों की जन सामान्य के लिए भोज्य पदार्थों की सुनिश्चित आपूर्ति से है सभी लोगों को दोनों समय पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन युक्त भोजन उपलब्ध कराना ताकि वे सक्रिय एवं स्वास्थ्य जीवन व्यतीत कर सकें।
- भारतीय अर्थव्यवस्था में लोगों की आर्थिक आय में असमानता पाई जाती है । अत: इस आधार पर भोजन की उपलब्धता समान रुप से नहीं हो पाती है जो बहुत गरीब है उनको ठीक से जीवन व्यतीत करने के लिए दो वक्त का खाना भी नही मिल पाता है।
- सभी को भोजन उपलब्ध हो पाए उसके लिए भारत सरकार ने राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 नामक कानून पारित किया हैं।
- इस अधिनियम के तहत भारत की 1.2 अरब आबादी को अर्थात दो तिहाई लोगों को कम दाम पर अनाज उपलब्ध कराई जाती है

© JCERT not to be republished

अभ्यास

1. बहुवैकल्पिक प्रश्न जाती है?

(i) निम्नलिखित में से कौन - सा उस कृषि प्रणाली को दर्शाता है जिसमें एक ही फसल लंबे - चौड़े क्षेत्र में उगाई।

(क) स्थानांतरी कृषि (ख) रोपण कृषि

(ग) बागवानी (घ) गहन कृषि

उत्तर - (ख)

(ii) इनमें से कौन - सी रबी फसल है ?

(क) चावल (ख) मोटे अनाज

(ग) चना (घ) कपास

उत्तर - (ग)

(iii) इनमें से कौन - सी एक फलीदार फसल है ?

(क) दाले (ख) मोटे अनाज

(ग) ज्वार तिल (घ) तिल

उत्तर - (क)

2. निम्नलिखित उत्तर लगभग 30 शब्दों में दीजिए?

(i) एक पेय फसल का नाम बताएँ तथा उसको उगाने के लिए अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियों का विवरण दें।

(ii) भारत की एक खाद्य फसल का नाम बताएँ और जहाँ यह पैदा की जाती है उन क्षेत्रों का विवरण दें।

(iii) सरकार द्वारा किसानों के हित में किए गए संस्थागत सुधार कार्यक्रमों की सूची बनाएँ।

(iv) दिन - प्रतिदिन कृषि के अंतर्गत भूमि कम हो रही है। क्या आप इसके परिणामों की कल्पना कर सकते हैं?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 120 शब्दों में दीजिए

(i) कृषि उत्पादन में वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए सरकार द्वारा किए गए उपाय सुझाइए।

(ii) भारतीय कृषि पर वैश्वीकरण के प्रभाव पर टिप्पणी लिखें।

(iii) चावल की खेती के लिए उपयुक्त भौगोलिक परिस्थितियों का वर्णन करें

परियोजना कार्य

1. किसानों की साक्षरता विषय पर एक सामूहिक वाद - विवाद प्रतियोगिता का आयोजन करें।
2. भारत के मानचित्र में गेहूँ उत्पादन क्षेत्र दर्शाइए।

© JCERT not to be republished